पंजाब का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

एक समय था जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विस्तार पंजाब के साथ-साथ पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा तथा दिल्ली तक था। भौगोलिक दृष्टि से पंजाब का विभाजन 1947 में पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में हुआ। फिर हिमाचल और 1966 में हरियाणा उससे अलग हुआ। पंजाब की प्रतिनिधि सभा का बंटवारा भी प्रान्त वार होता चला गया। सन् 1975 से पहले पंजाब, हरियाणा दिल्ली की एक ही संयुक्त सभा थी और स्वामी इन्द्रवेश उसके प्रधान थे। एमरजेंसी लगने पर जब स्वामी इन्द्रवेश जी गिरफ्तार होकर जेल गये तो पंजाब, हरियाणा व दिल्ली के एक आर्य समाजी गुट ने सार्वदेशिक सभा से सांठगांठ कर उनकी जेल-यात्रा के दौरान ही पंजाब सभा का बंटवारा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली के रूप में आनन-फानन में कर दिया और तदर्थ समितियाँ भी गठित कर दीं। चूँकि पंजाब सभा का यह त्रिशाखन स्वामी इन्द्रवेश जी को विश्वास में लिये बिना किया गया था इसलिए स्वामी जी ने इसे स्वीकार नहीं किया। तब पंजाब के उनके साथियों ने जो सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के निष्ठवान् सदस्य थे इस विभाजन का बहिष्कार करते हुए स्वामी जी के साथ ही रहने का फैसला किया। इन साथियों ने पंजाब में अपने संगठन का काफी विस्तार किया जिसकी वजह से वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा अपने मुख्यालय में ही सिमटती चली गई। चूँकि सम्पत्तियाँ सभा के कब्जे में थीं इसलिए इस पैसे के बल पर ही सभा अपने अस्तित्व का अहसास कराती रही अन्यथा उसका जमीनी सम्पर्क न के बराबर रहा।

सन् 2005 में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में पारस्परिक द्वंद्व खुलकर सामने आया और इन दोनों संगठनों ने अपने-अपने दावों की पुष्टि करने के लिए शक्ति-प्रदर्शन करना आवश्यक समझा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के ही अनुषंगी संगठनों आर्य वेद प्रचार परिषद् एवं महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर ने जब 10 अप्रैल 2005 को पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन अमृतसर में करने की घोषणा की तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उक्त सम्मेलन के विरुद्ध न केवल अपना फतवा जारी किया बल्कि पंजाब भर में घूमकर उसका विरोध भी किया। इतना ही नहीं, उसने 10 अप्रैल को ही जालन्धर में सामानान्तर सम्मेलन आयोजित करने की घोषणा भी कर दी और लोगों से अपील की कि वे 10 अप्रैल को अमृतसर न जाकर जालन्धर पहुँचें। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने यह षड्यन्त्र सार्वदेशिक सभा के विमल वधावन गुट के संकेत पर रचा था क्योंकि अमृतसर वाले सम्मेलन में स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी को पधारना था। इससे यह प्रतिद्वंद्वता अपने चरम पर जा पहुँची। एक तरफ धन-शक्ति का जोर था तो दूसरी ओर जन-शक्ति का भरोसा था। जालन्धर पहुँचने के लिए लोगों के लिए निःशुल्क वाहन व्यवस्था उपलब्ध थी तो अमृतसर पहुँचने के लिए लोगों को अपनी ही जेब खाली करनी थी। एक तरफ प्रचार की हुंकार थी तो दूसरी तरफ प्रेम की पुकार थी। मुकाबला दिलचस्प दौर में पहुँचता जा रहा था। जालन्धर वालों को अभिमान था दौलत की खनक का और अमृतसर वालों को विश्वास था अपनी मेहनत का। 10 अप्रैल 2005 परीक्षा की घड़ी आ पहुँची तो नतीजा भी निकल आया। अमृतसर के सम्मेलन में आर्यों का सैलाब उमड़ा और जालन्धर में हाजिरी इतनी नगण्य रही कि आयोजकों को मूँह छिपाने की जगह भी नसीब नहीं हुई। अमृतसर के इस करारे थप्पड़ से जालन्धर अपनी गाल सहलाता नज़र आया। जालन्धर सभा के प्रधान सुदर्शन शर्मा और विमल वधावन को अपनी-अपनी औकात और ताकत का अहसास हो गया। आपस में कहीं कोई मुकाबला ही नज़र नहीं आ रहा था। पंजाब की आर्य जनता ने दिखा दिया था, जता दिया था कि वह काम करने वालों के साथ है शेखी बघारने वालों के साथ नहीं। संगठन भवनों से नहीं मिशन से चलता है और जन-शक्ति के आगे मुख्यालय के फतवे कोई औचित्य नहीं रखते।

अमृतसर में आयोजित महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। स्वामी अग्निवेश जी महासम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जगवीर सिंह एडवोकेट इसके मुख्य वक्ता थे। इनके अलावा भव्य मंच पर आसीन थे अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट (जालन्धर), प्रिं. धर्मप्रकाश दत्त (नवां शहर), श्री रोशन लाल आर्य (लुधियाना), स्वामी ब्रह्मवेश (नाभा), डॉ. कुन्दनलाल पाल (पटियाला), श्री अजय सूद (मोगा), श्री वेदप्रकाश आर्य (दीनानगर), श्री रविन्द्र मेहता (दीनानगर), श्री बलवीर सिंह चौहान (चण्डीगढ़), डॉ. शिवदयाल माली (जालन्धर), माता जगदीश

आर्या (अमृतसर)। मंच संचालन किया सम्मेलन के मुख्य संयोजक आर्य नेता श्री ओमप्रकाश आर्य (अमृतसर) ने।

स्वामी अग्निवेश जी ने ज्योति प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। अपने ओजस्वी उद्बोधन में उन्होंने पंजाब के आर्यों का आह्वान किया कि अगले एक साल में हमें कम से कम एक लाख नये सदस्य आर्य समाज के बनाने हैं। पंजाब में सिखों व आर्यों के बीच सद्भावना विकसित करनी है। दिल्ली से अमृतसर तक कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध एक विशाल चेतना यात्रा निकालनी है। इन तीन मुद्दों पर हम सबको सक्रिय होकर अभी से जुट जाना होगा। स्वामी जी ने पंजाब में चल रही तीन-तीन प्रान्तीय सभाओं पर चिंता प्रकट करते हुए स्पष्ट किया कि अब पंजाब में केवल एक ही आर्य प्रतिनिधि सभा रहेगी। स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से नियुक्त पंजाब के प्रभारी श्री जगवीर सिंह के संयोजकत्व में एक आठ सदस्यीय समिति का गठन किया जो पंजाब के सभी गुटों से तालमेल कर शीघ्र ही अपनी रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को सौंपेगी जिसके आधार पर सार्वदेशिक सभा अपना अगला कदम उठायेगी। ये आठ सदस्य थे- सर्वश्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट, डॉ. शिवदयाल माली, ओमप्रकाश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, अजय सूद, बलवीर सिंह चौहान एडवोकेट, रोशन लाल आर्य और प्रिं. धर्मप्रकाश दत्त।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस महासम्मेलन को सफल बनाने वाली टीम विशेष कर श्री ओमप्रकाश आर्य, माता जगदीश आर्या, श्री वेद प्रकाश आर्य आदि की प्रशंसा करते हुए कहा कि संगठन में शक्ति और सक्रियता से ही गति आती है। शक्ति और गति जब मिलती हैं तो सफलता सुनिश्चित हो जाती है जो यहां देखने को मिल रही है। उन्होंने पंजाब की आर्य जनता से अपील की कि जिस जोश व उत्साह से आप यहां पधारे हैं उसे बनाये रखते हुए संगठन को मजबूत और गतिशील बनायें क्यांकि इसी से पंजाब में आर्य समाज का ध्वज बुलंद होगा। संगठन की संजीवनी लोकसम्पर्क अभियान से मिलती है अतः ज्वलंत मुद्दों को उठा कर जनता के बीच जायें और उसका विश्वास और प्रेम प्राप्त करें। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठा कर ही आर्य समाज ने पंजाब में अपनी दुन्दुभी बजाई थी, अपना सिक्का मनवाया था। स्वामी अग्निवेश जी के प्रधान चुने जाने व सार्वदेशिक मुख्यालय में उनके प्रवेश करने से आर्य समाज में जबरदस्त बदलाव आने की सम्भावनाएँ पैदा हो गई हैं। देश और विदेश में स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व को लेकर भारी उत्साह दिखाई पड़ रहा है जो गुल खिला कर रहेगा। हमें आशा रखनी चाहिए कि शीघ्र ही पंजाब में आर्य प्रतिनिधि सभा का संगठन मजबूत और सक्रिय होकर उभरेगा और वेद प्रचार का कार्य तीव्र गति से चलेगा।

इस अवसर पर सम्मेलन की व्यवस्था में दिन-रात एक करके जुटे कार्यकर्ताओं को आर्यरत्न की उपाधि से सम्मानित भी किया गया जिनमें सर्वश्री विजय कुमार आर्य, प्रवीण कुमार आर्य, इन्द्रपाल आर्य, प्रो. अशोक मेहता, डॉ. नवीन आर्य, डॉ. अंजु आर्या, रमेश कुमार, राकेश पसाहन, विनोद कुमार सरीन, पं. शिवकुमार, ओमप्रकाश आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं। धन संग्रह की मुख्य जिम्मेदारी माता जगदीश आर्या ने, पैर की हड्डी टूट जाने के बावजूद, पूरी तन्मयता से निभाई। सम्मेलन के संयोजक श्री ओमप्रकाश आर्य ने पूरे पंजाब का दौरा कर अथक परिश्रम किया और सम्मेलन में शानदार हाजरी दिखा कर जान डाल दी। जनता को जुटाने में गुरदासपुर जिले से छोटी-बड़ी दस बसें आईं जिसमें सर्वश्री वेदप्रकश आर्य, तरसेम लाल व रविन्द्र मेहता की मुख्य भूमिका रही।

सम्मेलन के उपरांत प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था। एक पत्रकार सम्मेलन को स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित किया। श्री ओमप्रकाश आर्य ने सभी आगन्तुकों का यहां पधारने पर धन्यवाद किया और आश्वासन दिया कि सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रम को वे तन-मन-धन से आगे बढ़ायेंगे।

अमृतसर के इस महासम्मेलन ने स्पष्ट तौर पर दिखा दिया कि पंजाब की जनता सुदर्शन शर्मा की आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ नहीं है। सुदर्शन शर्मा एक व्यवसायी है और अपने कारखाने के मजदूरों को एकत्र कर सभा-सम्मेलन के लिए मामूली भीड़ जुटा लेता है। उनकी पंजाब में न तो पकड़ है और न ही प्रभाव। सभा की करोड़ों की सम्पत्ति पर वह अकेला फन फैलाये बैठा है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी जैसी मलाईदार इकाइयों को भी वह अपनी जागीर समझे हुए है जो आर्थिक भ्रष्टाचार के अड्डे बने हुए हैं। उनका यह तिलस्म अधिक दिन नहीं टिक सकता।